Philosophy

Date

BA I Hons & BA I (Sub)

प्र. — सांख्य दर्शन का सत्कार्यवाद

उत्तर. भारतीय दर्शन के अन्तर्गत सांख्य दर्शन में कारणता सिद्धान्त अथवा सत्कार्यवाद में इस बात पर प्रश्न उठाया गया है कि क्या कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व में अपने उपादान कारण में विद्यमान रहता है या नहीं? इस विवादित प्रश्न का हल भारतीय दार्शनिकों ने दो रूपों में माना है— आकारगत तथा निर्धारणात्मक रूप में। आकारगत रूप में दिये गये उत्तर को सत्कार्यवाद तथा निर्धारणात्मक रूप से दिये गये उत्तर को असत्कार्यवाद कहा जाता है। आकारगत रूप से दिये गये कथनानुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में विद्यमान रहता है तथा निर्धारणात्मक रूप से दिये गये कथनानुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में विद्यमान नहीं रहता है।

भारतीय दर्शन में सत्कार्यवाद का समर्थन सांख्य दर्शन, बौद्ध दर्शन के माध्यमिक सम्प्रदाय तथा योगाचार सम्प्रदाय ने किया है जबकि इसके विपरीत असत्कार्यवाद का समर्थन न्याय-वैशेषिक, बौद्ध दर्शन के हीनयान, जैनवाद तथा मीमांसा दर्शन के कुछ सम्प्रदायों ने किया है। सांख्य दर्शन के अनुसार सत्कार्यवाद के भी दो रूप माने जाते हैं— परिणामवाद तथा विवर्तवाद।

P.T.O.

MICO LUBRICANTS

परिणामवाद के अनुसार कार्य कारण का वास्तविक रूपान्तरण है लेकिन विवर्तवाद के अनुसार कार्य कारण का वास्तविक रूपान्तरण नहीं है। इसी पर सांख्य तथा रामानुज ने परिणामवाद को स्वीकार किया है। यही कारण है कि सांख्य मत को प्रकृति परिणामवाद कहा जाता है जिसके अनुसार संपूर्ण विश्व प्रकृति का वास्तविक रूपान्तरण है। विश्व अपनी उत्पत्ति के पूर्व बीज रूप में प्रकृति में विद्यमान वर्तमान रहता है।

सांख्य दर्शन के सत्कार्यवाद को प्रमाणित करने के लिए अनेकों तर्क प्रस्तुत किया गया है जिसकी चर्चा सर्वप्रथम श्री कृष्ण ने सांख्य-कारिका नं०-9 के अन्तर्गत इस प्रकार की है —

' असदकरणादुपादान ग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्,
शक्तस्य शक्य करणात् कारण भावच्च सत्कार्यम्'

असदकरणादुपादान की चर्चा सांख्य कारिका नं०-9 के अन्तर्गत सत्कार्यवाद को प्रमाणित करने के लिए किया गया है जिसके अनुसार जो non-existent होकर कभी भी existent नहीं हो सकता। जैसे — बालू में तेल का अभाव है अतः बालू से तेल की कभी उत्पत्ति नहीं हो सकता।

गीता में भी इस सिद्धान्त का भाव व्यक्त किया गया है,

"नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः"

इसका यह तात्पर्य है कि प्रत्येक कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान रहता है,

उपादान ग्रहणवाद के द्वारा भी यह भाव व्यक्त होता है कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में विद्यमान रहता है। उपादान कारण वह है जिससे किसी पदार्थ की रचना होती है। सरल शब्दों में कहा जाए तो कि कार्य उपादान कारण में विद्यमान रहता है तो उपादान कारण अर्थहीन हो जाएगा।

उदाहरण - दही उत्पन्न करने के लिए दूध तथा तेल उत्पन्न करने के तेलहन (oil seeds) की खोज की जाती है।

सर्वसम्भव - सर्वसम्भाव का अर्थ होता है - All is not possible अर्थात् हर वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती उदाहरणार्थ - बालू से घी नहीं निकाला जा सकता इसका तात्पर्य यह कि प्रत्येक कारण से प्रत्येक कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

शक्तस्य शक्यकरणात् का अर्थ है कि किसी भी शक्य कारण से अभिष्ट कार्य की उत्पत्ति होना।

P.T.O.

जैसे दूध दही का प्रथम कारण है क्योंकि दही तब भी निर्मित होता जो दूध से ही तरह जानी है।

कारण आकार — कुछ कर्म और कारण अभिन्न है। कारणाकार को कुछ द्वारा भारतीय दार्शनिकों में सत्कार्यवाद का अंतिम प्रमाण के रूप में लिया गया है जिसके अनुसार कारण और कर्म में सामान्य को लेकर अन्तर पाया जाता है लेकिन कुछ विषय एकरूप रहता है, जैसे दूध को लकड़ी और रेशम का विषयवस्तु माना जाता है। लकड़ी और रेशम दूध के form के रूप में माना जाता है

भारतीय दर्शन में सत्कार्यवाद की आलोचना

मूलतः न्याय-वैशेषिक दर्शन में हुआ है। वास्तव में — सत्कार्यवाद में कहा है — when we perceive a new substance being produced by a fresh reconstruction we infer inter from in the cessation of the previous substance.

वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद ने अपने वैशेषिक सूत्र में कारण और कर्म की पृथकता को प्रमाणित किया है। दूध कारण और कर्म के बीच सम्बन्ध नहीं को स्वीकार किया है जिसके अनुसार दोनों एक दूसरे से पृथक हैं।

उपर्युक्त आलोचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय दर्शन में सत्कार्यवाद सर्वमान्य सिद्धान्त नहीं है।

— END —

MICO LUBRICANTS